चांगू काना ठाकूर कला, वाणिज्य और विज्ञान महाविद्यालय (स्वायत्त), नवीन पनवेल

हिंदी विभाग
एवं
आंतरिक गुणवत्ता सुनश्चयन प्रकोष्ठ (IQAC)
आयोजित
राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान (RUSA)
द्वारा पुरस्कृत

द्वि-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

१४-१५ फरवरी, २०२०

हिंदी और मराठी दलित साहित्य में अभिव्यक्त क्रांति चेतना

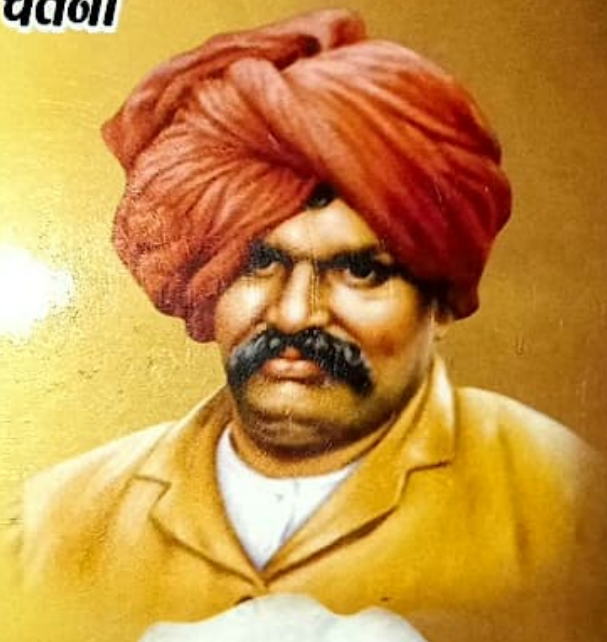

संपादक

डॉ. उद्धव तुकाराम भंडारे

अनुक्रमणिका

- दलित साहित्य की अवधारणा — २०
  डॉ. अर्जुन घरत
- दलित साहित्य की अवधारणा — २१
  संध्या
- दलित साहित्य की अवधारणा — २२
  डॉ. संजीवकुमार नरवाडे
- दलित साहित्य की अवधारणा — २३
  प्रमोद पब्बर यादव
- दलित साहित्य की अवधारणा — २४
  पुष्पा कृष्णकांत चौधरी
- दलित साहित्य की अवधारणा — २५
  डॉ. बालाजी सोपूरे
- दलित साहित्य की अवधारणा और विभिन्न आयाम — २६
  कु. कविता रॉय
- दलित साहित्य की अवधारणा — २७
  डॉ.राम सदाशिव बडे
- दलित साहित्य की अवधारणा — २८
  डॉ. पी. हरि रामप्रसाद
- दलित साहित्य की अवधारणा — २९
  डॉ. बी.आर. गायकवाड
- दलित साहित्य के तत्व — ३०
  प्रा. किसन भानुदास वाघमोडे
- दलित साहित्य की विशेषताएँ — ३१
  डॉ. सचिन गपाट
- दलित साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि — ३२
  डॉ. संगीता ठाकुर
- दलित चेतना: स्वरूप एवं विकास — ३३
  सायली पवार

दलित साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

डॉ. संगीता ठाकुर

भारतीय सामाजिक व्यवस्था मे दलित का अभिप्राय उन लोगों से है, जिन्हे जन्म, जाति या वर्णगत भेदभाव के कारण हजारो सालो से सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों से वंचित रहना पड़ा है। शुद्रों की भी हालत कोई खास अच्छी नही रही है, सवर्ण आज भी शुद्रों के साथ बैठकर खाने में या उसकी बिरादरी में शादी ब्याह से कतराते है। यह बिंडबना ही है कि समस्त प्राणियों में एक ही तत्व के दर्शन करने वाला वर्ण व्यवस्था को गुण और कर्म के आधार पर निर्धारित करने वाला समाज, इतना कट्टर कैसे हो गया कि निम्न जाति में जन्म लेने वाले को सब प्रकार के अवसरों से वंचित किया जाता रहा।

समाज की तरह साहित्य भी गतिशील होता है। साहित्य समाज में हो रहे परिवर्तन का साक्षी होता है। हमारा देश जितना विविध धर्मी है उसी के अनुरूप दलित साहित्य में भी विविधता है। दलित साहित्य की विकास यात्रा को एक नयी ऊँचाई मिल रही है। इसके ऐतिहासिक विकास क्रम पर अगर हम ध्यान केन्द्रित करे तो पता चलेगा कि इसकी निरंतरता में बहुत कुछ नया जुड़ा है। इसका दायरा कई मायनों में विस्तृत हुआ है। इसने एक तरफ जहाँ अपना भौगोलिक विस्तार कर अखिल भारतीय स्वरूप ग्रहण कर लिया है वही इसमें विधागत समृध्दि के साथ-साथ कलात्मक ऊँचाई भी आयी है। दलित साहित्य लेखन में दलित महिलाओं की भागीदारी ने न केवल दलित साहित्य के स्वरूप को प्रभावित किया है बल्कि पूरे भारतीय साहित्य के स्वर को उसने एक नयी दिशा दी है। हिन्दी दलित साहित्य ने मोटे तौर पर लगभग छः दशको की अपनी यात्रा पूरी की है। आधुनिक काल में दलित साहित्य की शुरूआत मराठी से मानी जाती है। १९७० के दशक में आत्मकथाओं की वजह से मराठी दलित साहित्य चर्चा में रहा। दया पवार की आत्मकथा 'अछूत' १९७९ में पहली बार मराठी में प्रकाशित हुई।

अध्यक्षा - हिन्दी विभाग

सोनोपंत दांडेकर महाविद्यालय, पालघर